रिकार्ड– मुखड़ा देख ले प्राणी..... ओमशांति प्रातःक्लास सोमवार 3.1.68

बच्चों ने गीत सुना। इनका अर्थ भी फिर जानना चाहिए कि कितना पाप बच रहे हैं। कितने पुण्य जमा हैं अर्थात् आत्मा को सतोप्रधान बनाने में कितना समय है। अभी कितना तक पावन बने हैं। यह समझ तो सकते हैं। चार्ट में कोई लिखते हैं कि हम दो/तीन घंटे याद करते हैं। कोई लिखते हैं कि एक घंटा। यह तो बहुत कम हुआ। याद कम करेंगे तो पाप भी कम कटेंगे। अभी तो पाप बहुत हैं ना, जो कटे नहीं हैं। आत्मा को ही प्राणी कहा जाता है। तो अब बाप कहते हैं कि हे आत्मा अपने से पूछो कि इस समय इस हिसाब से कितने पाप कटेंगे। चार्ट से पता पड़ता है कि हम कितने पुण्यात्मा बने हैं। यह तो बाप ने समझाया ही है कि कर्मातीत अवस्था तो अंत में ही होगी। याद करते2 आदत पड़ जावेगी। फिर पाप जास्ती कटने लग जावेंगे। अपनी ही जांच करनी है कि हम कितना बाप की याद में रहते हैं। इसमें गप्पे मारने की बात नहीं है। यह तो अपनी जांच करनी होती है। बाबा को अपना चार्ट लिखकर देंगे तो बाबा झट बतावेंगे कि यह चार्ट ठीक है या नहीं। असामी चलन की सर्विस देख बाबा झट बतावेंगे। बार2 याद कइयों की रहती होगी , जो म्यूजियम वा प्रदर्शनी के सर्विस में रहते हैं। म्यूजियम तो सारा दिन आवात–जावात रहता है। देहली में बहुत आते रहेंगे। बार2 बाबा का परिचय देना पड़ेगा। समझो किसको तुम कहते हो विनाश में बाकी 8/9 वर्ष है। कहते हैं यह कैसे हो सकता? हमारा विचार नहीं कहता। फट से कहना चाहिए यह हम कोई थोड़े ही बताते हैं। भगवानुवाच है ना। भगवानुवाच है ना। भगवानुवाच तो जरूर सत्य ही होगा ना। इसलिए ही बाबा समझाते हैं बाबा2 बोलो यह शिवबाबा की श्रीमत पर है। हम नहीं कहते हैं। श्रीमत उनकी ही है। वह है ही ट्रुथ। पहले2 तो बाप का परिचय जरूर देना पड़ता है। इसलिए बाबा ने कहा है हरेक चित्र में लिख दो शिवभगवानुवाच। वह तो एक्युरेट ही बतावेंगे। हम थोड़े ही जानते थे। बाप ने बताया तब हम श्रीमत कहते हैं कि 8/9वर्ष है। कब2 अखबार में भी डालते हैं फलाने ने .....की है कि विनाश जल्दी होगा। अब तुम हो बाप के बच्चे। स्टुडेंट हो ना। प्रजापिता ब्रह्माकुमार कुमारियां तो बेहद के हैं ना। तुम बतावेंगे हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। वही पतित–पावन ज्ञान का सागर है। पहले यह बात बता पक्का करा फिर आगे बढ़ाना चाहिए। शिवबाबा ने यह कहा है। यादव–कौरव आदि विनाश काले विपरीत बुद्धि शिवबाबा ने कहा है। शिवबाबा का नाम लेते रहेंगे तो इसमें बच्चों को ही कल्याण है। शिवबाबा को ही याद करते रहेंगे। बाप ने जो तुमको समझाया है वह तुम फिर औरों को समझाते रहो। तो सर्विस करने वालों का चार्ट अच्छा रहता होगा। सारे दिन में 8घंट सर्विस में बिजी रहते हैं। करके एक घंटा रेस्ट लेते होंगे। फिर भी 7घंटा तो सर्विस में रहते ही हैं। तो समझना चाहिए उनके विकर्म बहुत विनाश होते होंगे। बहुतों को घड़ी2 बाप का परिचय देते होंगे। तो जरूर ऐसे सर्विसेबुल बच्चे ही बाप को भी प्रिय लगेंगे। बाप देखेंगे यह तो बहुतों का कल्याण करते हैं। रात–दिन यही उनको चिंतन है हम बहुतों का कल्याण करें। बहुतों का कल्याण करते हैं गोया अपना कल्याण करते हैं। स्कॉलरशिप भी इसमें मिलेगा जो बहुतों का कल्याण करते होंगे। तुम बच्चों को तो यही धंधा है। टीचर बन बहुतों को रास्ता बताना है। पहले तो यह नालेज धारण करनी पड़े। कोई का कल्याण नहीं करते हैं तो समझा जाता है इनके तकदीर में नहीं है। बहुत बच्चे तो कहते हैं बाबा हमको नौकरी से छुड़ाओ। हम इस सर्विस में लग जावें। बाबा भी देखेंगे बरोबर की पूंजी है। बंधनमुक्त भी है। तब कहेंगे भले 500कमाने से इस सर्विस में लग बहुतों का कल्याण करें। अगर बंधनमुक्त हैं तो भी बाबा सर्विसेबुल देखेंगे तो राय देंगे। सर्विसेबुल बच्चों को जहां–तहां बुलाते रहते हैं। तो समझाना चाहिए यह मेरे से अच्छा महारथी है। स्कूल में स्टुडेंट्स जानते हैं ना यह भी पढ़ाई है। यह कोई कॉमन सतसंग नहीं है। सत्य माना ही सत्य बोलने वाला। हम श्रीमत पर आपको यह समझाते हैं। ईश्वर की मत अभी तुमको मिलती है। बाप कहते हैं बच्चे तुमको

वापस जाना है। अब बेहद का सुख (का) वर्सा लो। कल्प2 में तुमको मिलता ही आया है ;क्योंकि स्वर्ग की स्थापना तो कल्प2 ही होती है ना। यह किसी को पता नहीं है कि 5000वर्ष में चक्र रिपीट करता है। मनुष्य तो बिल्कुल ही घोर अंधेरे में हैं। अभी तुम तो घोर सोझरे में हो। जानते हो कि स्वर्ग की स्थापना तो बाप ही करेंगे। यह तो गायन भी है कि भंभोर को आग लग गई तो भी अज्ञान नींद में सोये रहे। भक्ति को अज्ञान मार्ग कहा जाता है। यह है ही ज्ञान। बेहद का बाप ही ज्ञान का सागर। उंच ते उंच बाप के काम भी उंचे हैं। ऐसा नहीं कि परमात्मा तो समर्थ है। जो भी चाहे सो करो। नहीं। यह भी ड्रामा अनादि बना हुआ है। सब कुछ ड्रामा अनुसार ही चलता है। लड़ाइयों आदि में भी कितने ही मरते हैं। यह भी ड्रामा की ही नूंध है। इसमें भगवान क्या कर सकते हैं? अर्थक्वेक होती है फिर कितना शोर करते हैं कि हे भगवान! ; परंतु भगवान क्या कर सकते हैं? भगवान को तो तुमने बुलाया ही है कि आकर विनाश करो। पतित दुनियां में ही बुलाया है ना। स्थापना करके और सभी का विनाश करो। मैं विनाश नहीं करता हूं। यह तो ड्रामा में ही नूंध है। खूनी नाहक खेल हो जाता है। इसमें तो ....आदि की बात ही नहीं है। तुमने ही कहा है कि पावन बनाओ। तो जरूर पतित आत्माएं जावेंगी ही ना। कई तो बिल्कुल ही समझते नहीं हैं। श्रीमत का भी अर्थ नहीं समझते हैं तो बंदर हुए ना। एकदम ही 100प्रतिशत पत्थर बुद्धि। भगवान क्या है, ड्रामा क्या है कुछ भी समझते नहीं हैं। कह देते हैं कि मनुष्य जो कह देवे सो ही होगा। इसको ही कहा जाता है पत्थर बुद्धि। कोई बच्चा ठीक नहीं पढ़ता है तो मां–बाप कह देते हैं कि तुम तो जैस पत्थर बुद्धि हो। सतयुग में तो ऐसे नहीं कहेंगे। कलियुग में तो है ही पत्थर बुद्धि। पारसबुद्धि यहां पर तो कोई भी हो नहीं सकता है। आजकल तो देखो मनुष्य.....ही करते रहते हैं। एक हार्ट निकालकर दूसरा डाल देते हैं। अच्छा ,इतनी मेहनत करके फिर क्या किया? परंतु इससे फायदा ही क्या होगा? बहुत रिद्धी–सिद्धी सीखकर आते हैं। फायदा तो कुछ भी नहीं। भगवान को तो याद ही इसलिए करते हैं कि हमको आकर पावन दुनियां का मालिक बनाओ। हम पतित दुनियां में रहकर दुःखी हो गए हैं। सतयुग में तो कोई भी बीमारी ,दुःख आदि की बात ही नहीं होती है। अभी बाप द्वारा ही तुम कितना उंच पद पाते हैं। पढ़ाई ही से एम.पी. आदि बनते हैं। कितने भभके में मगरूरी में रहते हैं। बहुत खुश रहते हैं। तुम बच्चे.....हैं बाकी थोड़े राज(रोज) जियेंगे। पापों का बोझा तो सिर पर बहुत है। बहुत सजायें खावेंगे। पतित तो अपने को कहते हैं। विकार में जाना पाप नहीं समझते हैं। पापात्मा ....बनते हैं ना। कहते हैं गृहस्थ आश्रम तो अनादि चला आता है। समझाया जाता है सतयुग–त्रेता में गृहस्थ आश्रम था। पापात्माएं नहीं थीं। यहां तो भ्रष्टाचारी पापात्माएं हैं। इसलिए दुःखी हैं। एम.पी. आदि बनना तो यह अल्पकाल का सुख है। बीमार हुआ यह मरा। मौत तो मुंह खोल खड़ी है। अचानक हार्टफेल हो जाता है। यहां है ही अल्पकाल काग विष्टा समान सुख। वहां तो तुमको अथाह सुख है। तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो। कोई प्रकार का दुःख न होगा। न गर्म हवा न ठंडी हवा होगी। सदैव बहार होगी। तत्व भी .....में रहते हैं। स्वर्ग.....है ही है। रात–दिन का फर्क है। स्वर्ग के लिए ही बुलाते हैं। आकर पावन दुनियां स्थापन करो। हमको पावन बनाओ। बाबा मुरली में डायरैक्शन देते रहते हैं। शिवबाबा कहते हैं यह तो हरेक चित्र पर लिख दो। तो बार2 शिवबाबा याद आवेंगे। ज्ञान भी देते रहेंगे म्यूजियम अथवा प्रदर्शनी के सर्विस में ज्ञान और योग दोनों इकट्ठे चलते हैं। याद में रहने से नशा रहेगा। तुम पावन बन सारे विश्व को पावन बनाते हो। तुम पावन बनते हो पावन सृष्टि जरूर चाहिए। पिछाड़ी में कयामत का समय होने कारण सबका हिसाब–किताब चुक्तू हो जाता है। तुम्हारे लिए हमको नई सृष्टि का उद्घाटन करना पड़ता है। फिर .....खोलते रहते हैं पवित्र बनाने लिए। नई दुनियां सतयुग का फाउंडेशन तो कोई डाल न सके। तो इस बात को याद भी करना चाहिए ना। तुम म्यूजियम आदि का उद्घाटन बड़े2 आदमियों से कराते हो तो आवाज़ होगा। मनुष्य समझेंगे यहां बड़े2 लोग भी आते हैं। कोई

कहते हैं तुम लिखकर दो तो हम बोलेंगे। वह भी रांग हो गया। अच्छी रीत समझ ओरली बोले तो अच्छा है। बहुत है जो लिखत में लिख–पढ़ कर सुनाते हैं। तो एक्युरेट हो। तुम बच्चों को तो ओरली समझाना है। तुम्हरी आत्मा में सारी नालेज है। तुम फिर औरों को देते हो। प्रजा वृद्धि को पाती रहती है। आदमशुमारी भी बढ़ती जाती है। सभी चीज़ बढ़ते रहते हैं। झाड़ सारा जड़जड़ीभूत हो गया है। जो अपने धर्म वाले होंगे वह निकल आवेंगे। पहले तो सबको मुक्तिधाम अपने घर जाना है। फिर नम्बरवार आते रहेंगे। कोई तो त्रेता के अंत तक भी आवेंगे। भल ब्राह्मण बनते हैं। ब्राह्मण कोई सभी सतयुग में नहीं आते। त्रेता अंत तक आवेंगे। फिर सूर्यवंशी–चंद्रवंशी खलास हो जावेंगी। फिर गिरते हो? यह सब समझने की बातें हैं। बाबा जानते हैं राजधानी स्थापन होती है। सभी एक रस हो न सके। राजाई में तो सब वैराइटी चाहिए ना। राजधानी को अंदर या प्रजा को बाहर या कहा जाता है अंदर वाले राजाई डिनायस्टी में रहते हैं। बाबा ने समझाया था वहां वजीर आदि की दरकार नहीं रहती। इन्हों को श्रीमत मिली जिससे यह बनें। फिर यह थोड़े ही कोई से राय लेंगे। वजीर,पर्सनल असिस्टेंट आदि कुछ भी नहीं होती है। फिर जब पतित होते हैं तो एक वजीर, एक राजा,एक रानी होती है। अभी तो कितने वजीर हैं। फूड मिनिस्टर,फलाना मिनिस्टर कितने ढेर हैं। वहां एक भी मिनिस्टर नहीं। यहां तो पंचायती राज्य है ना। एक की मत न मिले दूसरे से। एक से दोस्ती रखो। समझाओ काम कर देंगे दूसरा फिर आया उनको खयाल में न आया तो और ही काम बिगार (बिगाड़) देंगे। कितना भी समझाओ मानेंगे नहीं। एक की बुद्धि न मिले दूसरे से। वहां तो तुम्हारी सभी कामनायें पूरी होती हैं। वहां तुमने कितना दुःख उठाया है। इसका नाम ही दुःखधाम है। भक्तिमार्ग में कितने धक्के (खाते) हैं। भक्तिमार्ग है ही गिरने का मार्ग। यह भी है ड्रामा। जब दुःख हो जाते हैं तब फिर बाप आकर सुख का वर्सा देते हैं। बाप ने तुम्हारी बुद्धि कितनी खोल दी है। मनुष्य तो कह देते हैं साहुकारों के लिए स्वर्ग है। गरीब नर्क में हैं। तुम यथार्थ रीति जानते हो स्वर्ग किसको कहा जाता है। सतयुग में थोड़े ही कोई रहमदिल कह बुलावेंगे। यहां बुलाते हैं रहम करो। सुख दो। लिबरेट करो। बाप ही जानते हैं शांतिधाम–सुखधाम में ले (जाते) हैं। अज्ञान काल में तुम भी कुछ नहीं जानते थे। जो नम्बरवन तमोप्रधान सो ही फिर नम्बरवन सतोप्रधान बनते हैं। यह अपनी बड़ाई नहीं करते हैं। बड़ाई तो एक ही है। लक्ष्मी–नारायण को भी ऐसा बनाने वाला तो वह है ना। उंच ते उंच भगवान बनाते भी हैं उंच। बाबा जानते हैं सब तो उंच नहीं बनेंगे। फिर भी पुरुषार्थ करना पड़े। यहं तुम आते ही हो नर से नारायण बनने । कहते हैं बाबा हम तो स्वर्ग की बादशाही लेंगे। हम सत्यनारायण की सच्ची कथा सुनने आये हैं। बाप कहते हैं अच्छा तेरे मुख में गुलाब। मेहनत करो। सब तो लक्ष्मी–नारायण नहीं बनेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही है। राजाई घराणे में, प्रजा घराणे में चाहिए तो बहुत ना। आश्चर्यवत सुनन्ती, कथन्ती, फारकती देवन्ती फिर चाण्डाल का जन्म लेवंती। फिर भी आ जाते हैं और अपनी कुछ न कुछ उन्नति करते हैं। तो चढ़ पड़ेंगे। सरेंडर होते ही गरीब हैं। देह सहित और कोई की याद न रहे। बड़ी मंज़िल है। अगर सम्बंध जुटा हुआ होगा तो वह याद जरूर पड़ेंगी। बाप को या क्या याद पड़ेगा। सारा दिन .....में ही बुद्धि रहती है। कितनी मेहनत करनी पड़ती है। बाप कहते हैं मेरे बच्चों में भी उत्तम,मध्यम,कनिष्ट हैं। दूसरे कोई आते हैं तो भी समझते हैं यह पतित दुनियां के हैं। फिर भी यज्ञ की सर्विस करते हैं तो आदर देना पड़ता है। बाप युक्तिबाज तो है ना। नहीं तो यह है टावर ऑफ सायलेंस। होलियेस्ट ऑफ होली टावर। होलियेस्ट ऑफ होली बाप सारे विश्व को होली बनाते हैं। बाप कहते हैं मुझे ड्रामाअनुसार आना ही पड़ता है। कोई का भी दोष नहीं। पतित बने हैं। अब मैं आया हूं पावन बनाने। अब बनो। स्वर्ग का मालिक बनो। इस खेल में मेरा भी पार्ट है। सुखधाम–शांतिधाम ले जाने का। पार्ट बजाया अब अपनी उन्नति का खयाल

करो। ऐसे नहीं जो ड्रामा में होगा तो करेंगे। पुरुषार्थ तो करना है ना। पुरुषार्थ बिगर किसको पानी भी नहीं मिल सके। तो बच्चों को बाबा राय देते हैं। हमेशा शिवबाबा का नाम लेकर बोलो। बहुत हैं तो सिर्फ चक्र लगाकर चले जाते हैं। शमा पर परवाना कोई जलने वाले कोई ऐसे ही फेर पहन चले जाने वाले हैं। दैवीकुल का होगा तो फिर आ जावेगा। ड्रामा अनुसार समय पर बुद्धि में आता है। कितने आये फिर चले गये। अभी भी कितने ढेर सेंटर्स हैं। वृद्धि होती जाती है। इसमें खर्चा आदि की कोई बात ही नहीं। बुद्धि में चक्र याद है। बाप को भी याद करना है। यह टेव डालनी है। फिर धीरे2 पक्के हो जावेंगे। जिनके भाग्य न होगा वह कब भी बाबा के डायरैक्शन पर नहीं चलेंगे। तकदीर में नहीं है तो फिर तदबीर क्या करेगे? बिल्कुल ही भाग्य में न है। घड़ी2 भूल जायेंगे। विचार–सागर–मंथन तो तुम बच्चों को ही करना है। बाप को नहीं। विचार–सागर–मंथन करेंगे अच्छे2 प्वाइंट्स निकालेंगे। फिर दूसरों को भी समझावेंगे। धारणा नहीं करेंगे तो झोली भरेगी नहीं। यह तो समझ सकते हैं। प्रदर्शनी में बच्चे कितने मेहनत करते हैं। समझाते2 गले ही घुट जाते हैं। उंच बनने लिए मेहनत भी करनी पड़ती है। सर्विसेबुल बच्चों को खुशी रहती है। समझते हैं गांव में जावें। जाकर प्रोजेक्टर पर समझावें। भल स्लाइड्स आदि इतने अच्छे नहीं बने हैं। योग का जौहर नहीं है तो काम भी ऐसा होता है। नहीं तो प्रोजेक्टर के चित्र बहुत ही फर्स्टक्लास की होनी चाहिए। बाप तो समझाते पुरुषार्थ कराते रहते हैं। खबरदारी भी बहुत रखनी है। दुनियां बड़ी गंदी है। ब्रह्माकुमारियों का नाम सुनने से फिर हाहाकार मचा देते हैं। शास्त्रों में दिखाया है कृष्ण ने जामवंती को चुराया, यह किया। बातें तो यहां की हैं ना। कृष्ण तो कर न सके। गाली भी यह खावेंगे। शिवबाबा को तो गाली दे न सके। गाली भी यह खावेंगे। गाली देहधारी को मिलती है। श्रीकृष्ण तो सतयुग का .....था। यह भी किसको पता नहीं है। (तमोप्रधान) दुनियां है ना। जो विश्व का मालिक सतोप्रधान था वही अब तमोप्रधान बना है।

फिर सतोप्रधान बनना है। यह चक्र सिवाय तुम्हारे और कोई की बुद्धि में नहीं आ सकता। गीता में श्रीकृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है। कितनी झूठ है। सर्वोत्तम गीता, उनका भगवान पुनर्जन्म रहित, उसके बदली नाम फिर श्रीकृष्ण का डाल दिया है। जो पूरे 84जन्म लेते हैं। यह बात समझने भी बहुत टाइम लगता है। बड़े2 पंडित लोग समझ जायें यह बड़ी भारी भूल है। सो तो आगे चलकर होगा। नहीं तो इन्हों सबकी राजाई ही चली जावेगी। राजायें इन सन्यासियों आदि को माथा टेकते हैं ;क्योंकि पवित्र हैं। दुनियां में कोई को भी पता नहीं है। यह तो एक जन्म पवित्र बनते हैं। फिर भ्रष्टाचार से ही जन्म लेते हैं। देवताएं तो भ्रष्टाचार से जन्म नहीं लेते हैं। वह है बेहद के महात्मा। यह हैं हद के। वह श्रेष्ठाचारी हैं योगबल से पैदा होने वाले। योगबल की बहुत महिमा है ;परंतु कोई जानते नहीं हैं। सर्व का सदगति दाता एक है तो सदगति भी एक ही बार करेंगे न कि जन्मजन्मांतर करेंगे। एक ही बाप पतित–पावन निराकार है। तुम भी आत्मा निराकार हो। नंगे आये हो। यहां पार्ट बजाते पतित बने हो। फिर पावन बनाने वाला जरूर चाहिए। बाप आलराउंड कितना समझाते हैं ;पंरतु कोई2 को माया ऐसी थप्पर(थप्पड़) मार देती है जो बात मत पूछो। यह बड़ी ईश्वरीय लाटरी है। लाटरी में टिकिट लेते हैं ना। टिकेट तो लेते हैं बाप की बनने की। फिर दौड़ी नहीं पहन सकते हैं तो गिर पड़ते हैं। यह घोड़दौड़ है। आत्मा इस रथ से पार्ट बजाती है। फिर रथ को छोड़कर भागती है। जो याद की यात्रा में होंगे वही अच्छी रीत दौड़ेंगे। बच्चों को समझाया गया है कि मन्सा में भल कितने भी तूफान आयें, बहुत आवेंगे। वैद्य लोग कहते हैं कि बीमारी सारी बाहर निकलेगी। बाप कहते हैं तूफान बहुत आवेंगे। खबरदार रहना है। अजन टाइम है। फिर मैं बता दूंगा अब थोड़ा टाइम है। फिर देख लेना कैसे पुरुषार्थ करते है।। अभी तो कोई को निश्चय भी नहीं है। जो याद में रहते हैं वह बहुतों का कल्याण करते हैं। योग ही नहीं तो वह क्या मदद करेंगे। इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग।